शोध सारांश

साहित्य और सिनेमा दो अलग अलग माध्यम हैं। इस बात को हमें भली भांति समझना होगा। साहित्य की उम्र जहां हजारों वर्ष पुरानी है वहीं सिनेमा को अभी मुश्किल से महज़ सौ वर्ष ही हुए हैं। साहित्य और सिनेमा दोनों ही ऐसे माध्यम हैं जो अपने परिवेश, समाज और विचारधारा को व्यक्त करने में सबसे अधिक सक्षम हैं। इन दोनों विधाओं ने ही समाज को हमेशा से ही नवीन विचारो और प्रवृत्तियों से जोड़ा है। साहित्य और सिनेमा का संबंध देखें तो सिनेमा अपने आरम्भ से ही साहित्य का ऋणी रहा है। साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपने में समाहित किए हुए एक साथ प्रस्तुत कर सिनेमा ने अपनी प्रभावशाली उपस्थिति और महत्ता को दर्शाया है। कविता, कहानी, उपन्यास, एकांकी और नाटक आदि को सजीव रूप से अभिव्यक्त करने के लिए सिनेमा सशक्त माध्यम रहा है। आज शायद ही समाज का कोई ऐसा क्षेत्र हो जो सिनेमा से प्रभावित न हो । इतना ही नहीं साहित्य की शक्ति को सिनेमा सरलता से उन जनमानस तक पहुंचाने में भी मदद करता है जो पढ़ना लिखना नहीं जानते । सिनेमा की ताकत ही यही है कि वह बिना शर्त एक बार में ही लाखों तक पहुंचने में सक्षम है । सिनेमा की पहुंच वहां तक है जहां साहित्य दुर्लभ है। 500 रूपए के किसी उपन्यास पर जब 50 करोड़ की फिल्म बनती है तो वह तीस रूपए की सीडी में रूपांतरित होकर उनसे भी संवाद करती है जो साहित्य का मर्म नहीं समझते हैं।

सत्तर का दशक हिंदी सिनेमा और भारतीय समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस दशक के बाद जो सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन हुआ भारतीय जनमानस और हिंदी सिनेमा पर काफी गहरा असर पड़ा। यह वही समय था जब अमिताभ अपने एंग्री यंग मैन की छवि के जरिए युवाओं पर अपनी गहरी छाप छोड़ रहे थे। बॉबी जैसी फिल्में युवाओं को लुभाने में लगी हुई थी। भारतीय युवा तब उन्मुक्त प्रेम और हिंसात्मक फिल्मों की तरफ आकर्षित हो रहा था। ऐसे समय में गुलज़ार जैसे भावनात्मक कवि व लेखक का सिनेमा में आना उनके लिए कई तरह की चुनौतियों से भरा था। पर गुलज़ार के पास एक ताकत थी, वह थी साहित्य और भाषा की समझ।जिसने न केवल एक साहित्यकार के रूप में अपनी रचनाओं के माध्यम से भावुकता और संवेदनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण किया वरन् हिन्दी सिनेमा में एक सफल फिल्मकार, गीतकार व संवाद लेखक के रूप में ऐसे मुकाम पर पहुंचा दिया है, जहां आज किसी का पहुंचना चुनौतीपूर्ण है। सत्तर के दशक से आज तक गुलज़ार ऐसे व्यक्तित्व के रूप में उभरकर हमारे सामने आते हैं जिन्होंने व्यवसायिकता से भरे इस फिल्मी दुनिया में साहित्य की मशाल जलाए हुए है । इसी बात की पुष्टि करता हुआ कमलेश्वर के उपन्यास 'काली आंधी' पर उन्हीं के द्वारा निर्देशित फिल्म 'आंधी' का यह गीत द्रष्टव्य है□

"इस मोड़ से जाते हैं..."

यहाँ पर प्रस्तुत शोध का विषय "साहित्यिक कृतियों पर आधारित गुलज़ार की फिल्में" (विशेष संदर्भ : 'आंधी', 'मौसम', 'ख़ुशबू', 'इजाज़त') हैं। जिसमें फिल्म 'आंधी' और 'मौसम' कमलेश्वर के उपन्यास क्रमशः 'काली आंधी' और 'आगामी अतीत' पर, फिल्म 'खुशबू', शरत चंद्र के उपन्यास पंडित मोशाय पर, और फिल्म 'इजाज़त' बंगाली लेखक सुबोध घोष की कहानी 'जतु गृह' पर बनीं है। शोध को मूल रूप से तीन अध्यायों में बांटा गया है। पहले अध्याय में गुलज़ार का संक्षिप्त परिचय है। दूसरे में साहित्य, सिनेमा और गुलज़ार को लेकर उनके आपसी सम्बन्धों पर चर्चा की गई है। और अंत में तीसरे अध्याय में इन सभी फिल्मों को साहित्य और सिनेमा के पैमानों पर विश्लेषित किया गया है। गुलज़ार की ये सारी फिल्में ('आंधी', 'मौसम', 'ख़ुशबू', और 'इजाज़त') साहित्यिक परिवेश की तो हैं ही, साथ ही इन सभी फिल्मों में रिश्तों की महीन बारीकियों को समझाया भी है। गुलजार एक ऐसे ही फिल्मकार हैं, जिनकी फिल्में दिल के अतल में उतकर अरमानों और घायल होती भावनाओं को सहलाती है। अपने ही अंदर उतरकर अपने आप को पहचानने के लिए विवश करती हैं। उनकी फिल्में रिश्तों की जड़ों में आ गई सूखेपन को भावनाओं की तरलता से नमी करती है। गुलज़ार की फिल्में वहीं से शुरू होती है, जहां से आम मसाला फिल्मों का आते-आते दम घुटने लगता है। गुलजार उस समय के फिल्मकार हैं, जब हिन्दी सिनेमा का नायक कभी अपनी नादानियों तो कभी अपने विद्रोह की हरकतों से चार-पाँच प्रयासों में अपनी प्रेमिका को पाने में सफल हो जाता है। और विवाह सूत्र में बंधते - बंधते फिल्म का अंत हो जाता है। इस तरह की फिल्में हमें लुभाती तो हैं लेकिन अधिकतर लोगों की जिन्दगी का एकतरफा सच नहीं होती है। गुलजार की फिल्में जीवन के उस दौर से शुरू होती है जहां से एक आम आदमी अपने सर पर अपने समाज, परिवार और तमाम रिश्तों की जिम्मेदारियों को निभाने के लिए उठ खड़ा होता है। 'आंधी' (1975) फिल्म में अति महत्वाकांक्षी स्त्री की कहानी है जो राजनीतिक करियर के लिए अपने पारिवारिक जीवन को दांव पर लगा देती है। जबकि 'मौसम' (1975) फिल्म में एक ऐसे नायक की कहानी है जो अपनी प्रेमिका से शादी के पहले ही गर्भवती कर देता है और उसे अपनाए बगैर ही चला जाता है। बाद में उसे अपनाता है। 'खुशबू' (1974) फिल्म में एक ऐसी युवती की कहानी है जिसका विवाह बचपन में तय हो गया होता है। मगर आगे चलकर किन्हीं कारणों वश उसकी शादी उस युवक से नहीं हो पाती, और युवक दूसरी शादी कर लेता है। बाद में जब उसकी पहली पत्नी की मृत्यु हो जाती है तब उसे पता चलता है कि युवती अब भी उसका इंतजार कर रही है तो उसे मनाकर घर ले आता है। और इजाज़त फिल्म (1986) में पति पत्नी के जीवन में किसी तीसरे शख्स के आने की वजह से उत्पन्न हुई विसंगतियों की कहानी है।

वास्तव में गुलज़ार ने अपने इन सभी फिल्मों ('आंधी', 'मौसम', 'ख़ुशबू' और 'इजाज़त') और इनके एक से बढ़कर एक सदाबहार गीतों के जरिए हमारे सामने टूटते-बिखरते रिश्तों की अहमियत को बखूबी समझाया है। गुलज़ार के संपूर्ण लेखन का अवलोकन करने से सहज ही पता चलता है कि वे अपने लेखन द्वारा आधुनिक सिनेमाई कीचड़ में साहित्यिक कमल खिलाने के लिए तत्पर हैं। गुलज़ार के सभी गीत

व फिल्में भावुकता व संवेदनशीलता की चासनी में डूबी होती है। जिसका आस्वाद हमें तभी आ सकता है जब हम अपने आप को इस चासनी में डूबो सके। तभी हम उनके रिश्तों की महीन बुनावट को समझ सकेंगे और फिर जान सकेंगे कि गुलज़ार क्यों कहते हैं कि-

''हाथ छूटे भी तो रिश्ते नहीं छोड़ा करते,

वक्त की शाख से लम्हें नहीं तोड़ा करते।''

Research summary

Literature and Cinema are two different mediums. We have to understand this very well. Literature is thousands of years old where Cinema is just completed hundreads years. Literature and Cinema both are those mediums which are best able to express our environment, society and ideologies. These two disciplines are encouraged to always innovative society and trends. Literature and cinema, the cinema concerned from the outset of their literature is indebted. The various disciplines of literature are contained in submitted his together, impressive appearance and brilliant cinema. Poetry, story, fiction, and drama, and more vibrant as ekanki to cinema is best expressed powerful medium. Today hardly any area of society that is not affected by the cinema. Not only the power of cinema is to simply reflects of literature terms whose don't know able to write and read. Even it can touch that ground whichis untouchable to literature. When a film cost fifty crore subjected upon 500 Rs. Novel and when it bought in 30 Rs. CD then it communicate with those people also who even don't understand the scene of literature.

The Decade of the seventies are is very important for Hindi cinema and Indian society. After this decades there were abig social and political changes which had profound efffect on demographic Indian. This was the age when Amitabh Bachchan left on his deepest impression on as Angry Young Man on young indinan mind. Such as Bobby film was attract on youth this time. At that time young indian peoples are attract with Romantic Love story and Violent types of films. At the same time of entry of of such emotional poet and writer like Gulzar has full of challengesfor them. But there were on strength with Gulzar and that was understanding of literature and language. Who not only portrait of poignant sentimental through his composition but stand on top asa

very successful filmmaker and strong song writerin hindi cinema, wchich becomes so challengingto reach for someone. From the seventies Gulzar stands out in front of us as such personality who in the age of commercialization of Hindi Cinema stand up with lighted torch of literature. This prove by 'Aandhi' film directed by him based on Kamleshwar's novel 'Kali Aandhi' which has one of the song is 'Is mod se jate hain'.

Here the subject of Research is "Gulzar's fim based on Literary Creations" (special refrences on 'Aandhi', 'Mausam', 'Khushbu', Ijazat). In that first two films based on Kamleshwar's Hindi Novel. First on 'Kali Andhi' and second is 'Aagami Atit'. In which film 'Khushbu' based on Sharatchandra's Novel 'Pandit Moshay' and last film 'Ijazat' is based on Bangali writer Subodh Ghosh story 'Jatu Grih'. Research is divided into basically three chapters. In the first chapter is a brief introduction to the orchid. In other literature, cinema and discussed their mutual relations about Gulzar. And finally in the third chapter that included all these films were analyzed on literature and cinema. Gulzar's all these movies ('Aandhi', 'Mausam', 'Khushbu', Ijazat) are the literary environment, as well as the finer nuances of relationships in all these films explained. Gulzar is that kind of filmmaker whose films helps to touch and treatment of injured feelings from the bottom of heart. Work within your own forced to identify themselves. His films in the roots of the breaked relationships of emotions that moisture from the liquidity. Gulzar's movies where the common spice begins with come-come-own knee of movies. Buzzing when the time of Hindi cinema filmmaker ever from the antics of their revolt and managed to get a girlfriend in several attempts. And in this types of films at the end of marriage films also finished that moment. Such movies imitates life of most us but does not unilaterally of truth. From the round of buzzing films life begins from a commoner family and their society on its head, all relationships responsibilities stands up to play. That's where the 'Aandhi' (1975) movie is the story of a woman who in ambitious political career at stake on her family life. While the 'Mausam' (1975) movie is the story of a hero who married his girlfriend already pregnant and it is run without adopted. At the latter end point of film he accept her. 'Khushbu' (1974) movie is the story of a young woman in marriage was fixed in childhood. But later the young man his marriage causes fade from tame, and the young man takes the second marriage. After his first wife's death, is it suggests that young woman still has

her looking forward only to take home. And last film ‘Ijazat’ (1986) is a story of third dimension life partners. At the arrival of the third member story of the distortions that occurred.

In fact, from all these movies (‘Aandhi’, ‘Mausam’, ‘Khushbu’, Ijazat) and Evergreen songs Gulzar explained the importance of a breakdown relationships very brilliantly in front of us. An overview of the entire whole writing of Gulzar in modern cinematic sludge by literary Lotus look forward to feeding. Gulzar's all songs and movies are totly full of very sweet, sentimental and sensitive. Only then will we be able to understand the finer texture of their relationships and then will be able to learn that Gulzar why say -

"Hath chute bhi to rishte nahin chhoda karte,

Wakt ki shakh se lamhein nahin toda karte.”